उल्हास कशालकर

“ कलाकारों के कलाकार” यही जिनका परिचय है ऐसे उल्हास कशालकरजी | इनका जन्म महाराष्ट्र के एक सांगितिक परिवार में हुआ है | पिताजी पेशे से वकील और संगीतज्ञ थे |

संगीत की शिक्षा घर में ही शुरू हुई तद्पश्चात विश्वविद्यालयीन शिक्षा प्राप्त करने के लिये नागपुर में रहे | वहाँ उन्हें राजाभाऊ कोगजे जी और प्रभाकर राव खर्डेनविस जी से संगीत की शिक्षा प्राप्त हुई और वही पदव्युत्तर शिक्षा स्वर्णपदक के साथ संपन्न हुई | तत्पश्चात उल्हासजी पंडित गजानन बुवा जोशी और पंडित राम मराठे जी से तालीम लेने बम्बई पहुँचे |

वहॉ उन्हें ग्वालियर, जयपुर और आग्रा घराने की विधिवत तालीम मिली | इसी नींव पे उनकी अपनी एक आकर्षक शैली बनी जिससे हम सब परिचित है |

देश विदेशों में अनेक संगीत सम्मेलन में उन्होंने अपने गायन की प्रस्तुति दी है | एक विचारवंत कलाकार और एक गुरू के रूप में वो विद्यादान का कार्य कर रहे है |

१९९२ से वो कलकत्ता के ITC संगीत रिसर्च एकेडमी मे गुरू है |

उल्हास जी के शिष्य आज देश विदेश में संगीत की परंपरा को आगे ले जा रहे है और जिनकी अपनी एक पेहेचान है |

उल्हास जी को अनेक सम्मानों से नवाजा गया है जिनमें प्रमुख है संगीत नाटक एकेडमी अवॉर्ड ,महाराष्ट्र सरकार का प. भीमसेन जोशी जीवन गौरव पुरस्कार , मध्यप्रदेश सरकार का तानसेन पुरस्कार ,गुजरात सरकार का ओंकारनाथ ठाकुर पुरस्कार ,और भारत सरकार का पद्मश्री सम्मान | इसके अलावा उन्हें स्वर-रत्न, राग ऋषि और जगत् गुरू शंकराचार्य ने गान तपस्वी उपाधि प्रदान की है |

‘ परंपरा से नवता ‘ - यही है उल्हासजी के गायन का परिचय |